शब्द–ब्रह्म
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका
ISSN 2320 – 0871
17 जुलाई 2014

बौद्ध-दर्शन में अनात्मवाद की अवधारणा

डॉ. मनीष मेश्राम, सहायक प्राध्यापक,
स्कूल ऑफ बुद्धिस्ट स्टडीज एंड सिविलाईजेशन,
गौतम बुद्ध यूनिवर्सिटी, ग्रेटर नोएडा, यू.पी. भारत

शोध संक्षेप

बुद्धवचनों का पालन करने वाली भाषा को पालि भाषा कहते हैं। बुद्धवचन त्रिपिटक के रूप में सुरक्षित हैं; इसीलिए उसका 'पालि' नाम सार्थक समझा जाता है। 'अभिधानप्पदीपिका' शब्दकोश के निर्माता ने 'पालि' शब्द की उपर्युक्त निरुक्ति करते हुए यही स्पष्ट किया है कि, "पा पालेति रक्खतीति पालि, बुद्धवचन पालेतीति पालि" अर्थात पालनार्थक 'पा' धातु से 'पालि' शब्द बना है। उससे अभिप्राय है कि जो पालन करती है और बुद्ध वचनों की रक्षा करती वही 'पालि' भाषा है। पालि-साहित्य ने सारे संसार को सुख, सत्य, शांति का दर्शन दिया है। पालि-साहित्य ही सभी बौद्ध-दार्शनिक मूल शिक्षाओं की मूल आधारशिला है। इस शोध पत्र के द्वारा बौद्ध दर्शन में अनात्मवाद का स्वरूप तथा तत्व-दर्शन के मूलभूल योगदान को प्रस्तुत किया गया है।

मुख्य शब्द (Keywords): बौद्ध दर्शन, बौद्ध धम्म, अनात्म, अनीश्वरवाद, पंच स्कन्ध, निर्वाण

प्रस्तावना

संसार मे मनुष्य आदि जीवों को सुख पहुंचाने के लिए अनेक धर्म हैं। जिन्होंने भिन्न-भिन्न व्याख्याओं द्वारा भिन्न-भिन्न युगों मे भिन्न-भिन्न सिद्धांत चलाये हैं। उन समस्त धर्मों के बीच बौद्धधर्म 'दु:ख सत्य है तथा संसार की समस्त वस्तुएं अनित्य हैं', ऐसा मानता है। परंतु यह कोई खास चौंकाने वाली बात नहीं हैं, यह तो संसार के कितने ही दर्शन मानते हैं। किन्तु बौद्ध का अनात्मवाद का सिद्धांत सचमुच चौकाने वाला है, क्योंकि किसी न किसी रूप में आत्मा का अस्तित्व तो लगभग सभी दर्शन (चार्वाक दर्शन को छोड़कर) मानकर चलते हैं।

बौद्धदर्शन अनीश्वरवादी तथा अनात्मवादी है। इनका अनात्मवाद का सिद्धांत अत्यंत गहन है। अनात्मन1 अर्थात जो आत्मा या, मन से रहित हो, जो आत्मिक न हो या जो आत्मा से भिन्न हो, वह अनात्म है, और इस अनात्म से युक्त विचारधारा अनात्मवाद है। अनात्मवाद2 आत्मा का अस्तित्व नहीं मानता है। बुद्ध के अनुसार मनुष्य के व्यक्तित्व मे पाँच स्कन्धों के अतिरिक्त और कोई ऐसा तत्व नहीं है जिसे आत्मा या आत्मीय कहा जा सके। फलत: बौद्ध दृष्टि में सभी वस्तुएं क्षणिक होती हैं। मानवीय व्यक्तित्व के रूप मे किसी सातत्यवान, प्रागनुभवी, अनादि एवं अनिश्वर सत्ता के अस्तित्व को अस्वीकार

कर बौद्ध दार्शनिक इसे रूप, संज्ञा, संस्कार, वेदना, और विज्ञान स्कंधों में विश्लेषित करते हैं। धम्मपद मे बुद्ध ने स्पष्ट रूप से कहा है कि, जो व्यक्ति समस्त चेतन और अचेतन चीजों को

अनित्य, दु:खपूर्ण तथा आत्मविहीन समझ लेता है, वह दु:ख से उद्वेलित नहीं होता।3 एक बार अग्निवेश गोत्री सच्चक साधु ने गौतम बुद्ध से पूछा कि आप अपने शिष्यों को कौन-सी शिक्षा देते हैं तब भगवान ने उत्तर में कहा कि मैं रूप, वेदना, संज्ञा, संस्कार, तथा विज्ञान की शिक्षा अपने शिष्यों को देता हूँ।4 समन्वयार्थी बुद्ध ने कहा है कि रूप, वेदना, संज्ञा, संस्कार तथा विज्ञान ये पाँच स्कन्ध आत्मा नहीं हैं।5 बुद्ध ने कहा है कि पृथ्वी,

जल, तेज, वायु, तथा श्रुत, स्मृत, विज्ञान सबको न मैं, न मेरा समझना चाहिए, क्योंकि ये मेरे नहीं और न मैं इनका हूँ6 यही बुद्ध का अनात्मवाद है।

तथागत ने पञ्च्च्वर्गीय भिक्षुओं को कहा है कि "भिक्षुओ! रूप, वेदना, संज्ञा, संस्कार, विज्ञान आत्मा नहीं है, तथा ये सब अनित्य हैं और जो अनित्य हैं वे दु:खरूप हैं। अत: जो कुछ भी यहाँ रूप, वेदना, संज्ञा, संस्कार तथा विज्ञान है चाहे वह अतीत का हो या भविष्यत का या वर्तमान का, आन्तरिक या बाह्य, स्थूल या सूक्ष्म, हीन या प्रणीत, समीप या दूर का वह सब मेरा नहीं है, वह मेरी आत्मा नहीं है। इस प्रकार सम्यक प्रज्ञा द्वारा यथाभूत रूप से देखना चाहिये।7 अगलद्दूपमसुत्त में भगवान बुद्ध ने कहा है जो तुम्हारा नहीं है उसका परित्याग करो। उसका परित्याग ही तुम्हारे लिए सुखदायी तथा हितकर है। रूप, वेदना, संज्ञा, संस्कार, तथा विज्ञान अनात्म हैं। इस आत्मवाद का परित्याग ही सुखकर है। चुलवेल्लसुत्त में कहा है जो आर्यदर्शन से वंचित है, वही सत्व पंच्चस्कंधों में आत्मा की पर्येषणा करता है।8 इस प्रकार तथागत प्रवेदित अनात्मवाद के सिद्धांत को सुनने वाले आर्यश्रावक के तीन तथ्य अधिगत होते हैं-

1.रूप, वेदना, संज्ञा, संस्कार, तथा विज्ञान को आत्मा मानना अयौक्तिक है, क्योंकि ये बादा, व्यापन्न और रोग परिगत हैं।

2.रूप, वेदना, संज्ञा, संस्कार, तथा विज्ञान अनित्य तथा दु:ख है। अत:

इनमें आत्मा नहीं हो सकती।

3.अत: आत्मा न होने से आर्यश्रावक निर्वेद को प्राप्त करता है, और

निर्वेद के पच्यात विराग तथा विराग से विमुक्ति अधिगत होती है। तत्पच्यात विमुक्ति से यह ज्ञान होता है कि मैं विमुक्त हूँ, जन्म संक्षिण हो गया, ब्रहाचर्यावास पूर्ण हुआ, जो करना था सो कर लिया अब कुछ करने को शेष नहीं। ऐसा वह यथाभूत प्रज्ञा के द्वारा जानता है।

अनात्मवाद का मूल प्रयोजन

अनात्मवाद के सिद्धांत का निरूपण करने में भगवान बुद्ध का प्रयोजन था कि संसार में प्रवाहमान सत्व पंचेंद्रिय एवं अन्य विषयों में आसक्त रहेगा तो उसे पूर्ण वैराग्य अधिगत नहीं होगा। विमुक्त हुए बिना प्रतिष्ठित चरम तत्व की प्राप्ति नहीं हो सकती। सम्पूर्ण संसार को अनित्य, अनात्म, तथा दु:खरूप मानने वाले व्यक्ति को ही ज्ञान, प्रीति, तथा प्रश्रब्धि की प्राप्ति होती है। अनात्मचिंतन से ही मनुष्य यथाभूत परमार्थसत्य का साक्षात्कार करता है। अनात्मचिंतन से सम्पूर्ण जगत गंधर्वनगर तथा माया-मरीचिका के समान शून्य परिलक्षित होने लगता और वैराग्य की भावना दृढ़ीभूत होती है। वैराग्य से विमुक्ति की प्राप्ति होती है और अंतत: देहान्त संज्ञा में निर्वेद का अधिगम होता

है। अनात्म चिन्तन से ही ज्ञान की उपलब्धि होती है।

संक्षेपत: सभी वस्तुओं में दु:खता, अनित्यता का अनुभव ही अनात्मचिंतन है। यही कारण है कि सारीपुत्र ने अनात्मवाद को भगवान का नित्यकल्प शासन कहा है।9 बुद्धोपदिष्ट अनात्मवाद का उपदेश पूर्ण रूप में एकमात्र है। यह उपदेश भगवान बुद्ध ने अग्निवेश गोत्री सच्चक10, आनन्द11, राहुल12 तथा अपने शिष्य पूर्ण13 को दिया।

भारतीय समाज में प्राचीन काल से लेकर आधुनिक काल तक ईश्वरवाद, वर्णवाद, और जातिवाद की जड़ में आत्मवादी धारणा मूल कारण है। इस कारण को जड़ से नष्ट करने का एकमेव उपाय है बुद्ध का अनात्मवाद। आधुनिक भारत कि समाज व्यवस्था को ग्रस्त अस्पृश्यता महा-रोग को जड़-मूल से नष्ट करने का मानवातावादी कार्य बोधिसत्व बाबासाहेब अम्बेडकर के अनात्मवादी दर्शन की आधारशिला पर ही किया है। बुद्ध के अनात्मवाद मे ही समता, स्वतन्त्रता, बन्धुता का समता-मूलक समाज का दर्शन अभिप्रेत है। बुद्ध के अनात्मवाद का भावार्थ है, प्रज्ञा और करुणायुक्त मानवी-समाज की स्थापना। मानव-मानव से मैत्रीपूर्ण व्यवहार ही अनात्मवाद का सामाजिक स्वरूप है। जो आज के भारत के संविधान में अभिव्यक्त हुआ है और समतामूलक समाज की स्थापना के लिए महत्वपूर्ण योगदान है।

पंच्चस्कंध

'खन्ध' जिसका संस्कृत स्वरूप 'स्कन्ध' है, साधारणतया समूह अथवा समुच्चय के अर्थ में प्रयुक्त होता है। यद्यपि इसका शाब्दिक अर्थ 'कंधा' व 'वृक्ष का तना' है।14 छान्दोग्य15 में यह शब्द शाखा अर्थ में प्रयुक्त हुआ है। इसी अर्थ में मैत्राणी16 में भी प्राप्त हुआ है। इन सबसे पृथक बौद्धदर्शन में जीवन के पाँच तत्व रूप ही पाँच स्कन्ध है.17 शिशुपालवध में भी इन स्कंधो का उल्लेख है।

"सर्वकार्यशरीरेषु मुकत्वान्ड्स्कंध पञ्छकम।
सौगतनामिवात्माडन्यो नास्ति मंत्रो महिभृताम॥18

पंचस्कन्ध सजातीय पदार्थों की पाँच राशियाँ हैं।

"राश्यायद्वारगोत्रार्था: स्कंधायतनधातव:।19

रूप, वेदना, संज्ञा, संस्कार, एवं विज्ञान ये पाँच स्कन्ध है।20 रूप स्कन्ध: पाँच आध्यात्मिक रूपी इंद्रियों चक्षु, श्रोत, घ्राण, जिह्वा एवं काय पाँच बाह्यरुप इंद्रियाँ, रूप, शब्द, गन्ध, रस, एवं स्पर्श तथा एक अविज्ञप्ति, इन ग्यारह प्रकारों का सम्मिलित नाम रूप स्कन्ध है।21 धम्मसंगणि में रूप के बारे में कहा है- "च-तारो च महाभुता चतुन्न च महाभूतानां उपादाय रूपं"22 अर्थात चार महाभूत अथवा तत्व और उन महाभूतों के ग्रहण से जो कुछ उत्पन्न होता है उसे रूप कहते हैं। वेदना स्कन्ध: सुख, दु:ख, उपेक्षा इन तीन वेदनाओं का समुचित नाम वेदना स्कन्ध है।23 संज्ञा स्कन्ध: सविकल्प एवं निर्विकल्प दो प्रकार की संज्ञाएँ होती हैं। इनमें से प्रत्येक के अल्प, महत एवं अप्रमाण तीन-तीन भेद होते है।24

संस्कार स्कन्ध: इसमे संप्रयुक्त एंवम विप्रयुक्त संस्कार होते हैं। वेदना एवं संज्ञा को छोड़कर सभी चैतसिक संप्रयुक्त संस्कार है।25 इन चैतसिकों के अतिरिक्त १४ विप्रयुक्त संस्कार होते है।26

विज्ञान स्कन्ध: इसमे छ: विज्ञान सम्मिलित होते हैं- चक्षुविज्ञान, श्रोतविज्ञान, घ्राणविज्ञान, जिह्वा विज्ञान, कायविज्ञान, और मनोविज्ञान।27

मनुष्य को इन्ही पाँच स्कंधो का संपुंचन कहा जाता है। वह कोई शुद्ध सत्ता नहीं है। वरन भौतिक और मानसिक अवस्थाओं का समुदाय मात्र है। सभी भौतिक अवस्थाओं का संग्रहात्मक नाम 'नाम' है। रूप में 'रूप स्कन्ध' तथा नाम में 'वेदना, संज्ञा, संस्कार, तथा विज्ञान स्कन्ध' समाहित हैं। इसे ही चैतसिक द्वारा व्यक्त किया गया है। ये सभी उत्पत्ति और विनाश के क्रम में घूमा करते हैं। वस्तुत: आत्मा नामक कोई पृथक सत्ता नहीं है। पंचस्कन्धों के आधार पर ही व्यक्ति के व्यक्तित्व की उपलब्धि होती है। व्यक्ति पंचस्कन्धों से मिलकर बनाता है। पंचस्कन्ध बदलते रहते है, उनमें परिवर्तन होता रहता है। परन्तु व्यक्ति की अवस्था पहले की अवस्था को संस्कारों के रूप में साथ लेकर आगे बढ़ती है, यानि की आने वाली अवस्था पर अपनी छाप छोड़ जाती है। यही कारण है कि अवस्था से वे पूर्ण रूप से नए नहीं होते। त्रिपिटक के अनेक सुत्तों में इन स्कन्धों को प्रतीत्यसमुपन्न, अनित्य, क्षणिक, दु:ख और अनात्म रूप में व्यक्त किया है।28 चौबीस घण्टे के एक दिन में 6 अरब, 40 करोड़, 99 हजार, 980 क्षण होते हैं तथा ये पाँचों स्कन्ध प्रतिक्षण व बारम्बार उत्पन्न और नष्ट होते रहते है।29

अनात्मवाद और निर्वाण:

बुद्धदर्शन में यह आपत्ति उठाई जाती है कि अगर आत्मा का अस्तित्व ही न हो तो निर्वाण प्राप्ति कर व्यक्तित्व का भी नाश हो जायेगा और यदि अपना अस्तित्व ही नष्ट हो जायेगा तो निर्वाण प्राप्ति के लिये प्रयत्न करना मूर्खता है। इस विषय को दीपक के उदाहरण से स्पष्ट किया गया है। निर्वाण अर्थात 'बुझ जाना' अग्नि या दीपक की तरह बुझाया गया'30 जिस प्रकार दीपक से तेल समाप्त हो जाने पर दीपक बुझ जाता है, उसी तरह तृष्णारूपी तेल न मिलने से तृष्णा के कारण निर्मित दु:ख मिट जाएंगे। अत: नष्ट होने वाली बातें हैं- तृष्णा, मोह, द्वेष, अविज्ञा और अविज्ञा जनित दु:ख निर्माण की श्रृंखला। आत्मा तो है ही नहीं। व्यक्ति तो रहेगा परन्तु अब उसकी दृष्टि प्रज्ञा पर आधारित है। अब यथाभूत वास्तविक सत्य का उसे ज्ञान हो गया है, अब दु:ख जो कि अज्ञान पर आधारित है नष्ट हो जाएंगे। व्यक्ति का दृष्टिकोण बदलेगा परन्तु व्यक्ति तो रहेगा ही।

निर्वाण से तात्पर्य अस्तित्व का मिटना नहीं है, अपितु राग, द्वेष, मोह, तृष्णा, अविज्ञा आदि का नष्ट होना है। निर्वाण प्राप्ति के बाद बुद्ध भी रहे, 45 वर्ष तक उन्होंने जनजागरण का कार्य किया। अत: निर्वाण से तात्पर्य तृष्णा आदि के समाप्त होने के कारण मोह, द्वेष, आदि समाप्त होने से है। तृष्णा और मिथ्या दृष्टि नष्ट हो, फिर भी अगर व्यक्ति रहे तो उसके जीवन कि विषय वस्तु आकर्षक बनाई जा सकती है। इसके लिए स्थायी आत्मा कि कोई आवश्यकता नहीं है। अब भी व्यक्ति स्कन्ध संघात ही रहेगा। परन्तु प्रज्ञा के कारण उसकी इच्छाएं करुणा, मुदिता, उपेक्षा, आदि से प्रेरित होंगी। अब व्यक्ति के लिये तथागत आदर्श होंगे।

हम बीज और उससे निकले वृक्ष का उदाहरण याद रखें। वृक्ष यद्यपि बीज से भिन्न है तथापि पूर्णत: भिन्न नहीं है। इसी तरह वयस्क और वृद्ध व्यक्ति, बालक या किशोर से पूर्णत: एक न होते हुए भी पूर्णत: भिन्न नहीं है। व्यक्तित्व सतत

परिवर्तनशील, सतत विकासशील श्रृंखला या इकाई है।

निष्कर्ष

अंतत: बुद्ध प्रणीत पालि उपदेशों का निष्कर्ष यही है कि पूरे ब्रह्मांड में कोई भी भौतिक या अभौतिक तत्व शाश्वत नहीं है। और न व्यक्ति के अंदर कुटस्थ आत्मा है, न विश्व के पीछे कोई ईश्वर है। वर्तमान विज्ञान भी इन निष्कर्षों का समर्थन ही करता है। सभी समस्याओं की जड़ आत्मवादी मिथ्या दृष्टि ही है। जो समाज और व्यक्ति में दु:ख और यातनाओं को जन्म देती है। इस पर एकमेव उपाय और मार्ग बुद्ध का अनात्मवादी दर्शन ही है जो आज के भारत और विश्व के सभी लोग के बीच मे मानव कल्याण-हितार्थ दर्शन को प्रस्थापित किया है। अनात्मवादी दर्शन से ही सभी लोगो का कल्याण हो सकता है। यही दर्शन भारत मे सच्चे-मानवतावादी समाज की आधारशिला है। भारतीय समाज की विभिन्नता में एकता स्थापित करने का कार्य इस अनात्मवादी दर्शन से संभव हो सकता है। वर्तमान भारत का संवैधानिक मानवीय अधिकार एवं कर्तव्य की आधारशिला बुद्ध का अनात्मवादी दर्शन ही है। जो भारत के सभी मानवीय-दर्शन तथा अन्य धर्म-दर्शन को भी प्रभावित और शुद्ध करने मे निरन्तर सहायक-भूत है।

बौद्ध दर्शन का अनात्मवाद ही भारतीय समाज-दर्शन परस्पर-मैत्री और करुणा का आचरण करने के लिए प्रभावित कर रहा है। इसी दर्शन के आधार पर भारत देश का वैज्ञानिक एवं तकनीकी क्षेत्र में भी विकास हो रहा है। अनात्मवाद-दर्शन विश्व की सभी मानवजाति को सुखमय और शान्तिपूर्ण जीवनयापन करनेका एकमेव मार्ग और उपाय है, जो तथागत बुद्ध की महत्वपूर्ण खोज है।

संदर्भ ग्रन्थ

1.वामन शिवराम आप्टे, संस्कृत हिन्दी कोश, पृ.32
2.हिन्दी विश्वकोश, खण्ड-१, काशी, नागरी प्रचारिणी सभा, वाराणसी, पृ.113
3.धम्मपद, गाथा स. 277-79
4.मज़्जीम निकाय, 1.4.5
5.हिन्दी विश्वकोश, खण्ड-१, काशी नागरी प्रचारिणी सभा वाराणसी, पृ.113
6.मज्जिम निकाय, मूलपरीयसूत्त (प्रथम सुत्त)
7.विनयपीटक (अनत्तलकखनसुत्त अनन्त परियायो} महावग्ग, पृ. सं. 16
8.चुलवेदल्ल सुत्त, मज्जिम निकाय 1.5.4
9.छत्रोवाद सुतन्त, मज्जिम निकाय, 3.5.2
10.चूलसच्चक सुतन्त, मज्जिम निकाय, 1.4.5
11.महानिदानसूत्त, दिघनिकाय, 2.2 पृ.44
12.चूल राहुलोवाद्सुत्त, मज्जिम निकाय, 3.5.3
13.पुण्णवाद सुतन्त, मज्जिम निकाय, 3.5.3
14.संस्कृत हिन्दी कोश, वामन शिवराम आप्टे, पृ.1132
15.छान्दोग्य- उपनिषद, 2.23
16.मैत्रयनी संहिता, 7.2
17.संस्कृत हिन्दी कोश, वामन शिवराम आप्टे, पृ.1132
18.शिशुपालवध, 2.28
19.अभिधर्मकोश, वसुबन्धु, 1.20, पृ.30
20.संयुक्त निकाय, 3.86
21.बौद्ध-सिद्धांत सार, दलाई लामा, केंद्रीय उच्च तिब्बती शिक्षा संस्थान, वाराणसी, पृ.16-17
22.धम्मसंगणी, पृ.124
23.बौद्ध-सिद्धांत सार, दलाई लामा, केंद्रीय उच्च तिब्बती शिक्षा संस्थान, वाराणसी, पृ.17
24.वही।
25.वही, पृ.17
26.अभिधर्म कोश, वसुबन्धु, 2 35-36
27.बौद्ध-सिद्धांत सार, दलाई लामा, केंद्रीय उच्च तिब्बती शिक्षा संस्थान, वाराणसी, पृ.17
28.महानिदानसूत्त, दिघनिकाय, 2.9; महासतीपठठानसुत्त, दिघनिकाय, 2.9; संयुक्त निकाय, 21/7

ISSN 2320 – 0871
17 जुलाई 2014

29. संयुक्त निकाय, 2.94/95
30.वामन शिवराम आप्टे, संस्कृत हिन्दी शब्द कोश,
पृ.538